गैरेट मॉर्गन

ट्रैफिक लाइट के आविष्कारक

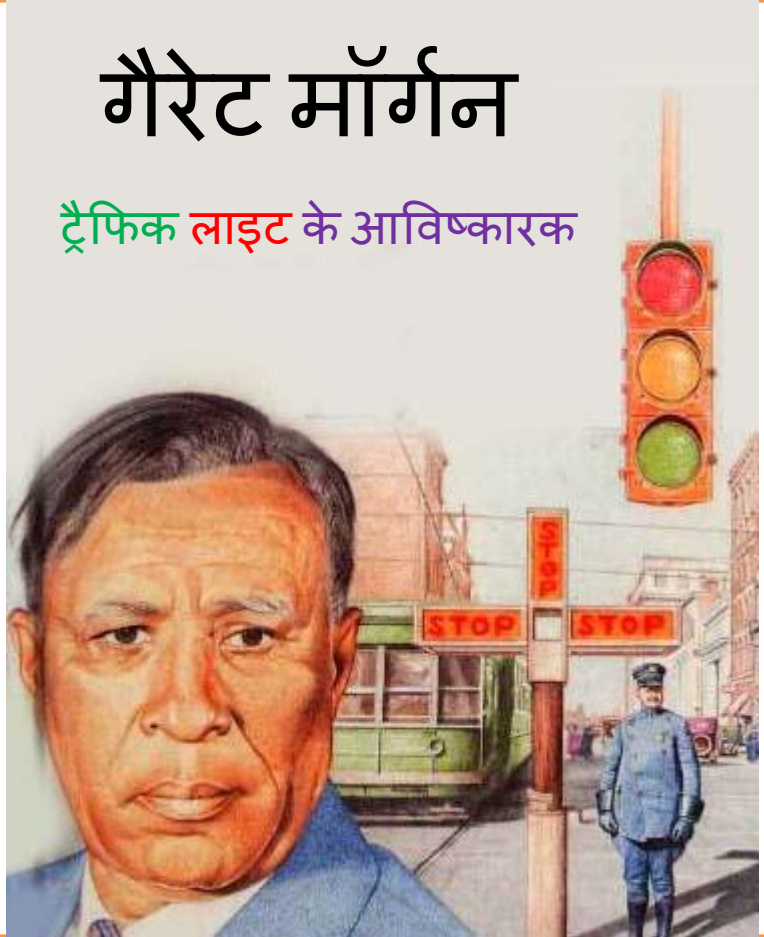

यह गैरेट मॉर्गन की कहानी है. जब वो छोटा था तब वो बहुत उत्सुक था. वह हमेशा यह जानना चाहता था कि चीजें कैसे काम करती हैं, और वो उन्हें कैसे बेहतर बना सकता हैं.

जब गैरेट बड़ा हुआ, तो उसकी जिज्ञासा और चीजों को बेहतर बनाने की उसकी इच्छा ने, कई उपयोगी आविष्कारों को जन्म दिया - ऐसे आविष्कार जिन्होंने लोगों की जान बचाई.

आविष्कार करते समय गैरेट की मुख्य इच्छा दूसरों की मदद करना थी. यह विचार बेहद महत्वपूर्ण था!

गैरेट मॉर्गन

ट्रैफिक लाइट के आविष्कारक

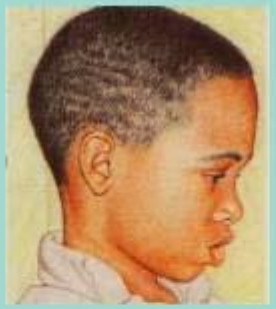

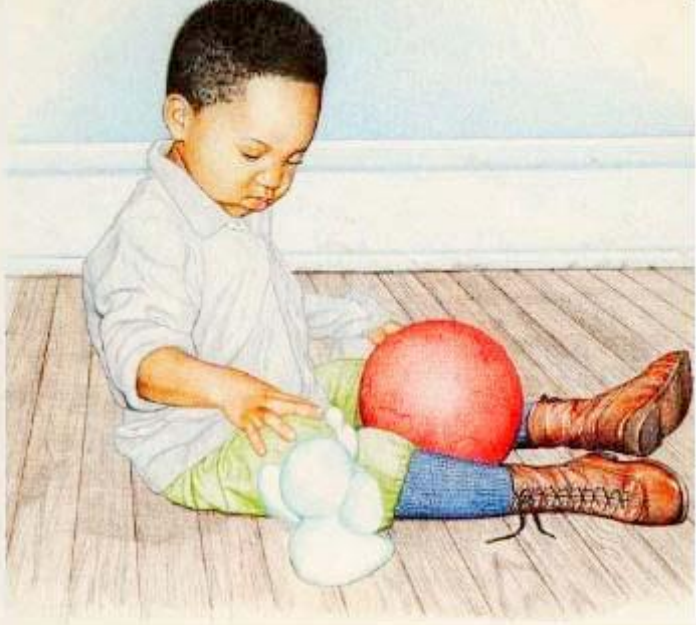

गैरेट का जन्म केंटकी के एक छोटे से शहर में हुआ था.

जल्द ही उसके माता-पिता को पता चल गया कि वे वास्तव में काफी भाग्यशाली थे.

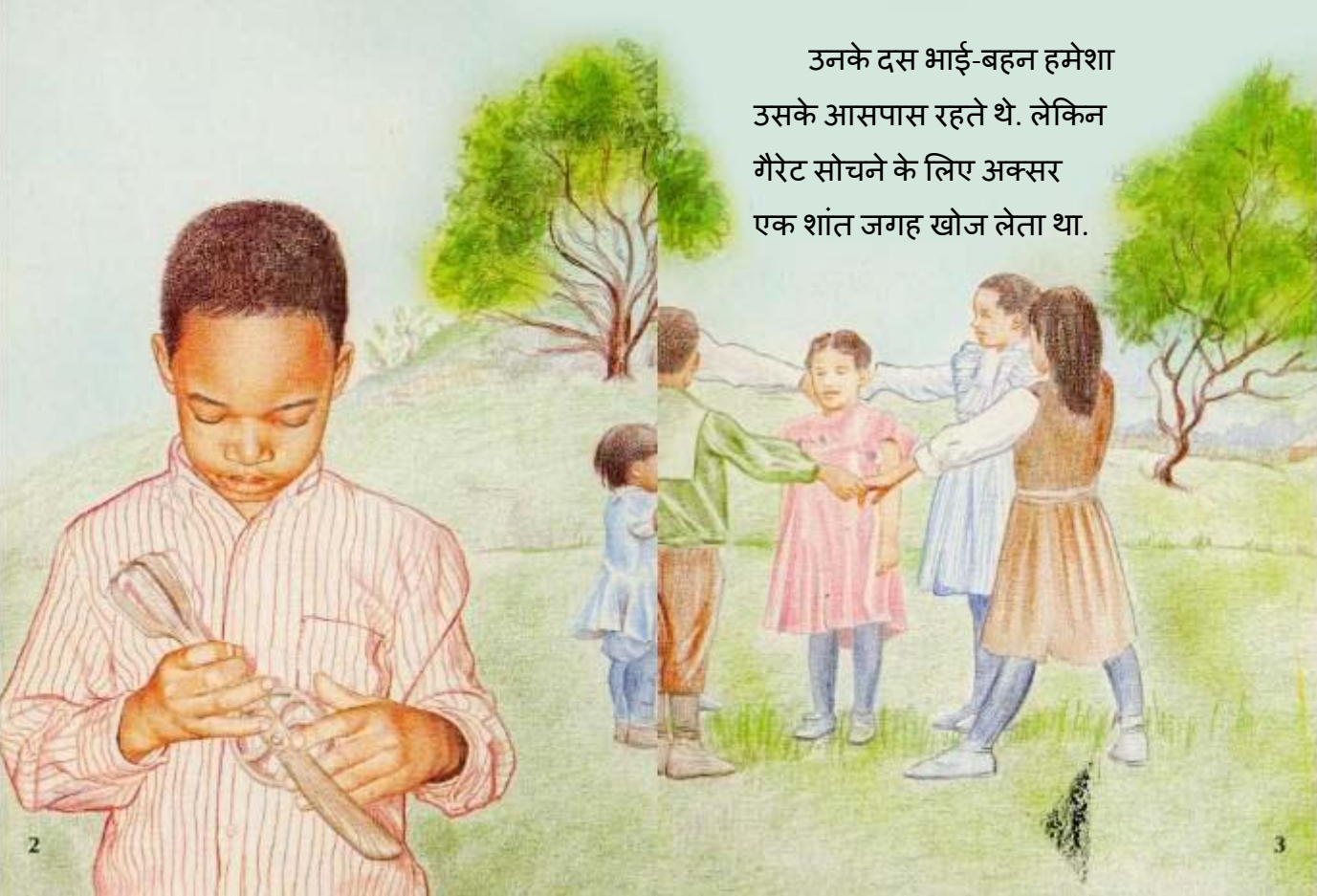

उनके दस भाई-बहन हमेशा
उसके आसपास रहते थे. लेकिन
गैरेट सोचने के लिए अक्सर
एक शांत जगह खोज लेता था.

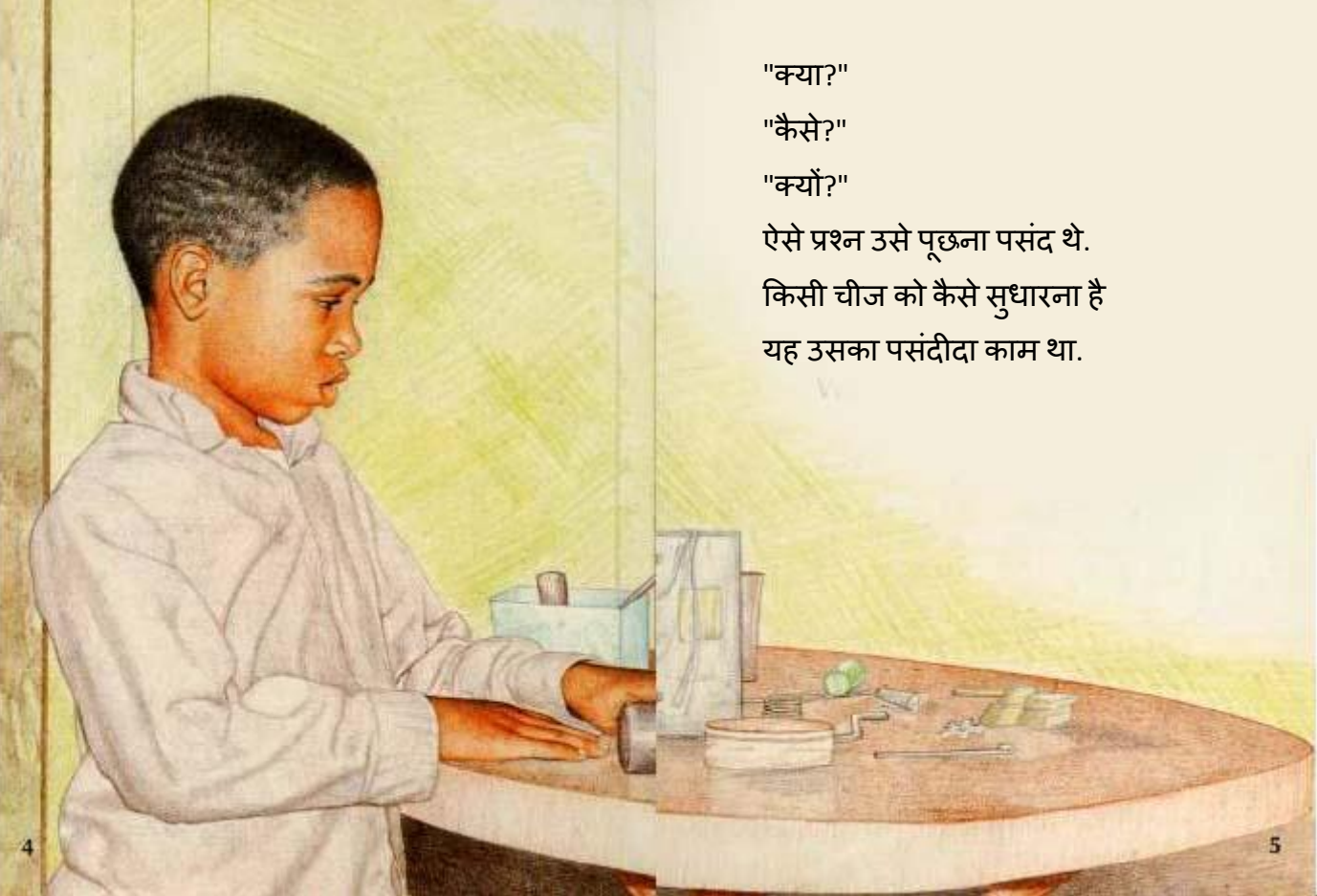

"क्या?"

"कैसे?"

"क्यों?"

ऐसे प्रश्न उसे पूछना पसंद थे.

किसी चीज को कैसे सुधारना है

यह उसका पसंदीदा काम था.

चौदह साल की उम्र में गैरेट अपने परिवार को छोड़कर ओहियो चला गया. वो देखना चाहता था कि वो वहां क्या कर सकता था.

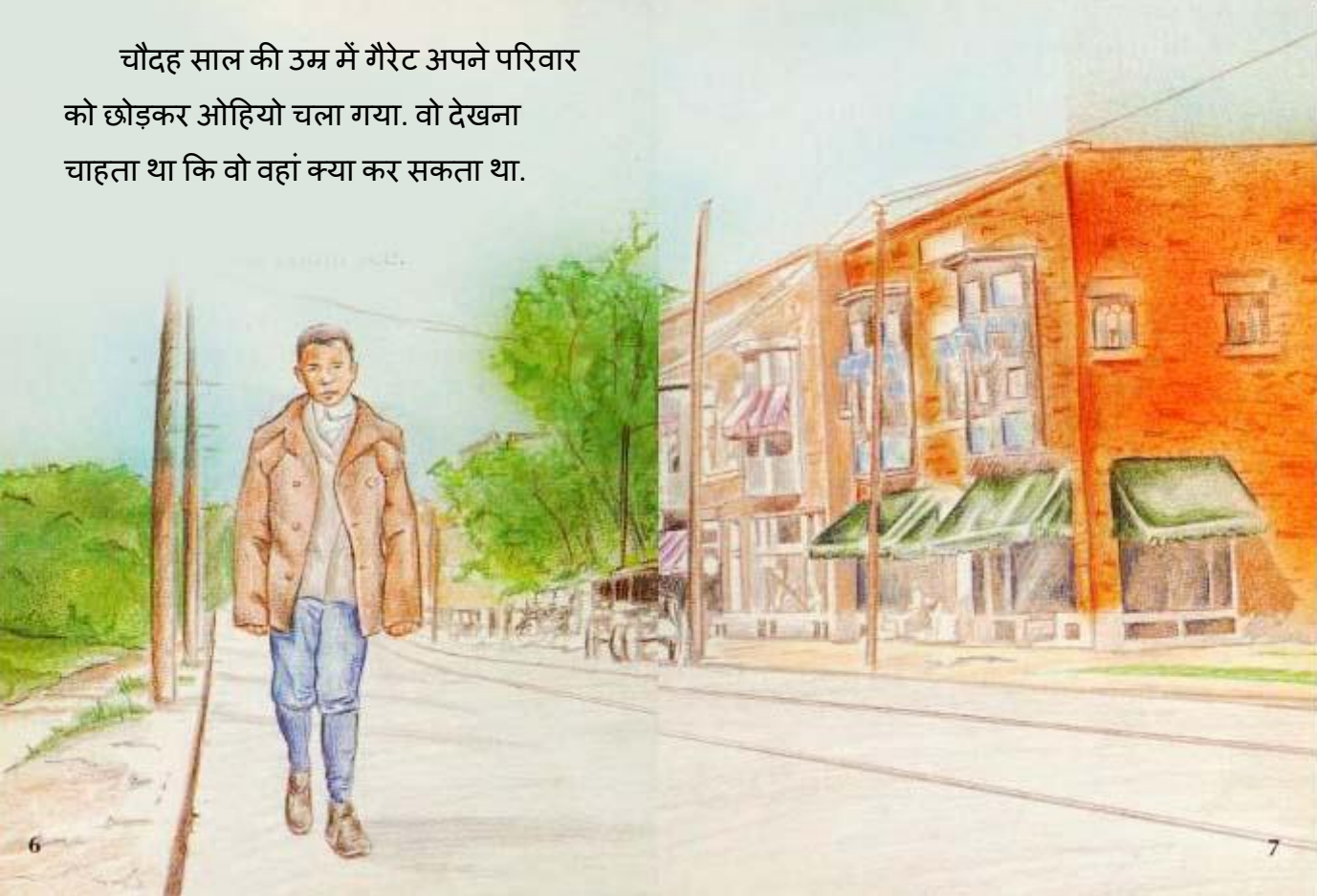

जल्द ही गैरेट क्लीवलैंड चला गया. धीरे-धीरे वो नए-नए विचार सोचता रहा. उसने एक मरम्मत की दुकान खोली और साथ में आविष्कार भी करने लगा.

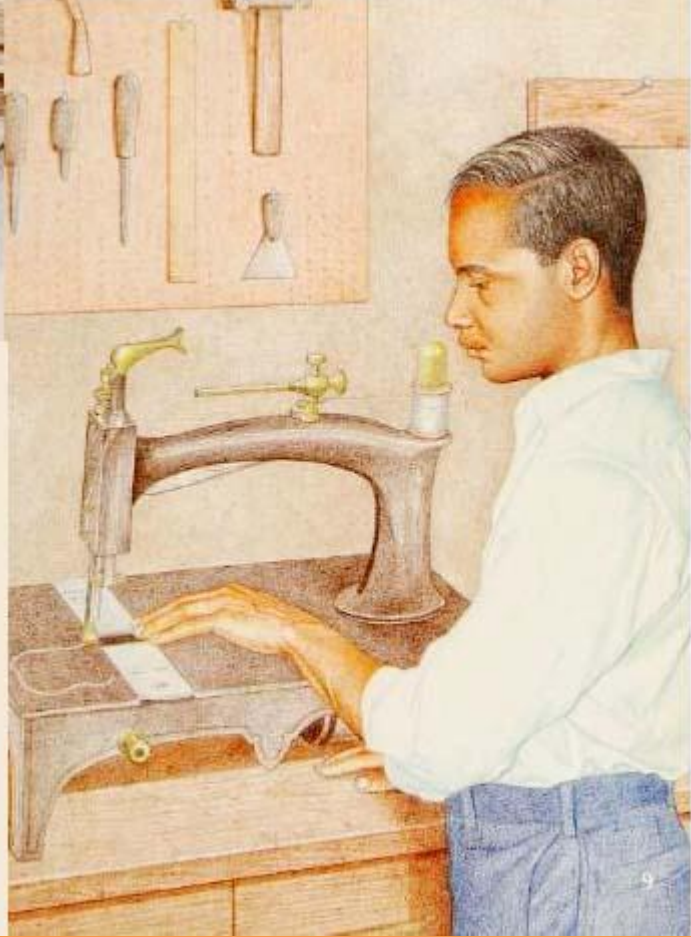

फायर-ब्रिगेड के लोगों को साफ़ हवा देने के लिए, गैरेट ने एक सुरक्षा-हुड का आविष्कार किया.

उस समय शहरों की व्यस्त सड़कों पर, चालकों को यह समझ में नहीं आता था कि वे कब रुकें और कब जाएं.

गैरेट ने तमाम दुर्घटनाएं और हादसे देखे! फिर उसने झुंझलाहट के साथ कहा, "हमें अपने शहरों में यातायात को सुधारना चाहिए."

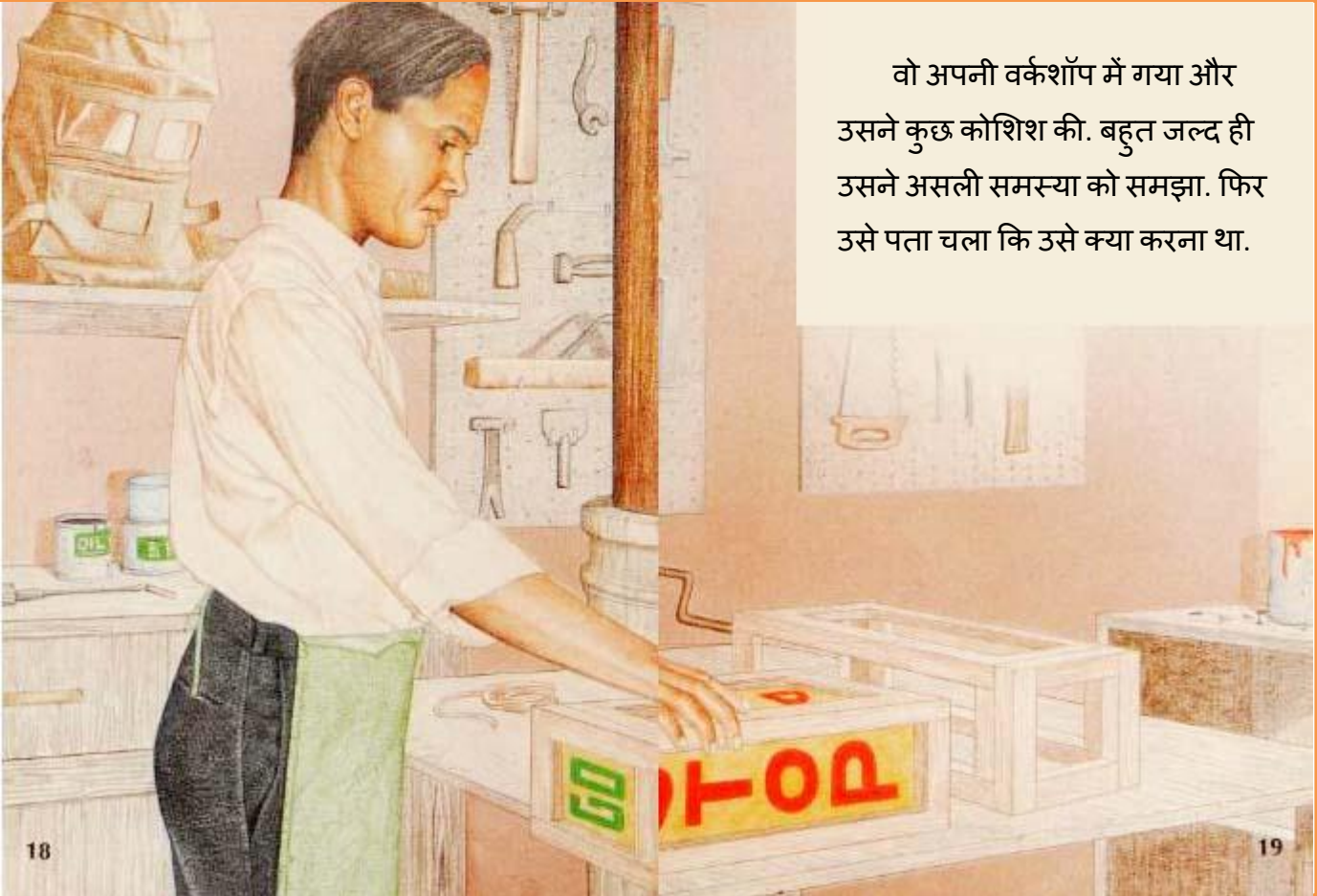

वो अपनी वर्कशॉप में गया और उसने कुछ कोशिश की. बहुत जल्द ही उसने असली समस्या को समझा. फिर उसे पता चला कि उसे क्या करना था.

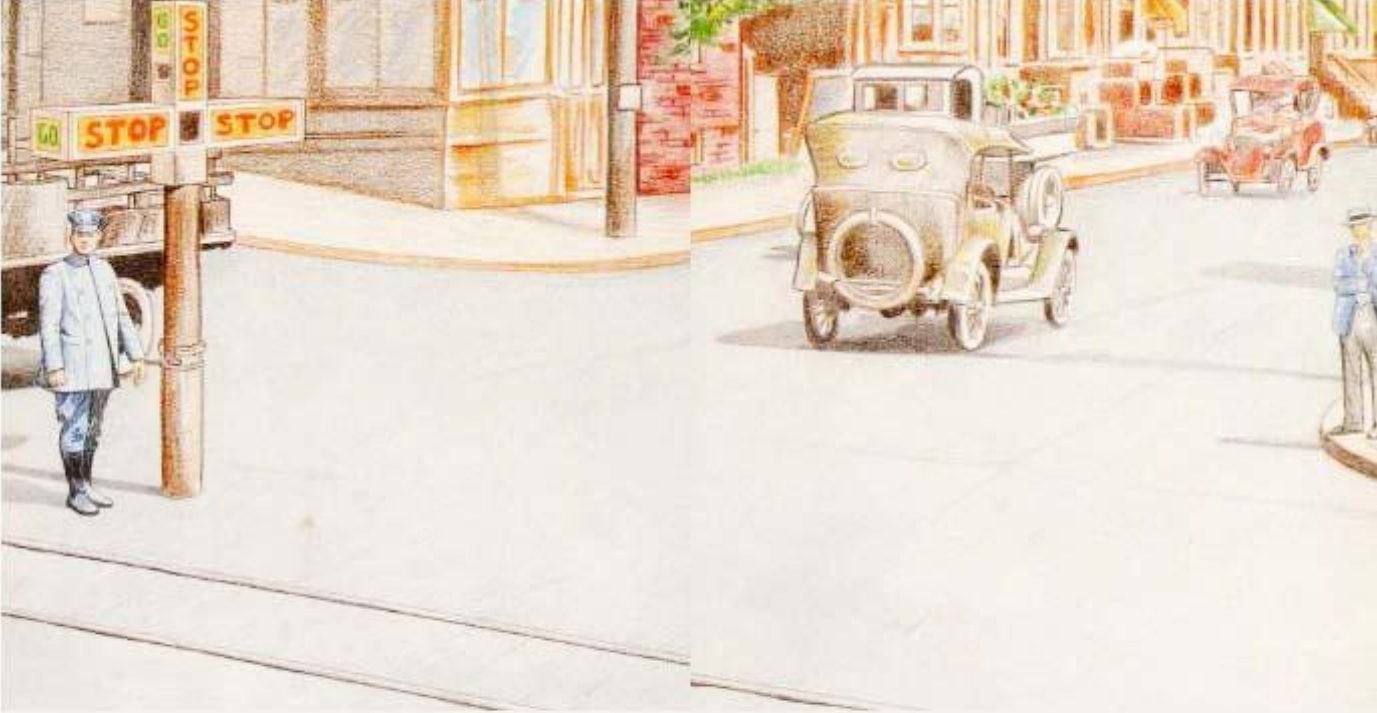

गैरेट का महान विचार प्रशंसा के योग्य है. उसने अलग-अलग दिशाओं में जाती कारों के लिए **ट्रैफिक सिग्नल** डिज़ाइन किया.

एक ओर जाने वाली कारों को लाल रंग की बत्ती पर रुकती थीं बाकी कारें हरी बत्ती देखते ही आगे बढ़ जाती थीं.

उसके बाद हमारे शहरों की सड़कों पर ट्रैफिक के लिए श्रम बहुत कम हुआ.

1923 में ट्रैफिक समस्या का समाधान मिला.

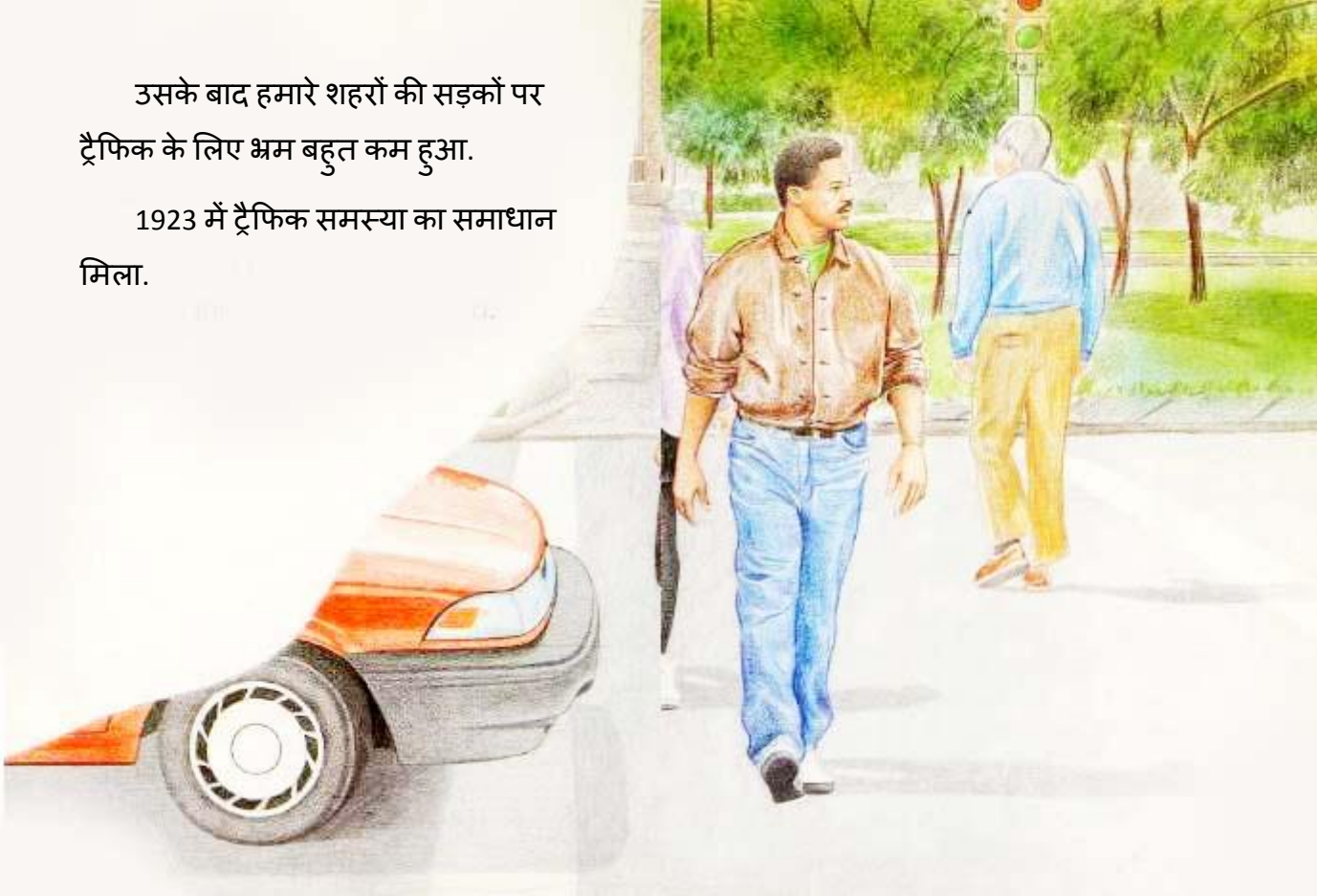

लाल का मतलब है रुको!

हरे का अर्थ है जाओ!

गैरेट मॉर्गन ने हमें यही बताया!

अंत